चतुर्थ अध्याय

प्रेमचंद के साहित्य में नारी

(प्रेमचंद के उपन्यास 'गोदान', 'निर्मला', 'सेवासदन' और 'गबन' के विशेष संदर्भ में)

4.1. भूमिका :

प्रेमचंद को किसानों का चितेरा बहुतेरा कहा गया है। लेकिन उनके उपन्यासों के स्त्री पात्र भी कम महत्वपूर्ण नहीं है। उनके ये सभी पात्र बेहद जीवंत और सकर्मक हैं। इन पात्रों के जरिए प्रेमचंद स्त्री की सामाजिक भूमिका को रेखांकित करते हैं। उनके स्त्री पात्रों की मुखरता और निर्णय लेने की क्षमता प्रत्यक्ष है। प्रेमचंद के उपन्यास-साहित्य में नारी के विभिन्न रूप हैं। कभी वह जननी है तो कभी सहचरी, कभी वह बहन है तो कभी प्रेमिका परन्तु सामाजिक परिस्थितियों का शिकर होकर वह रूप के बाजार में बिकने वाली वस्तु भी बन जाती है, कभी काल के क्रूर हाथों से पति के छिन जाने पर वह वैधव्य का शिकार बन जाती है, कभी पति द्वारा ठुकरा दिए जाने पर वह आधारहीन हुई लता की तरह हो जाती है- ये सब नारी जीवन की ट्रेजडी है। इनके क्या कारण हैं- इस पर प्रेमचंद ने अपने उपन्यासों में प्रकाश डाला है।

4.2. प्रेमचंद के उपन्यासों के प्रमुख नारी पात्र

('गोदान', 'निर्मला', 'सेवासदन', और 'गबन' के विशेष संदर्भ में) :

प्रेमचंद ने अपने उपन्यासों में हर तरह के स्त्री पात्रों को स्थान दिया है। मातायें हैं; बहने हैं, पुत्रियाँ हैं, पत्नियाँ हैं, प्रेमिकाएं हैं, वेश्याएं हैं, ग्रामीण हैं, शहरी हैं, परम्परागत नारियाँ है, तो आधुनिकताएं भी है। सती साध्वी हैं तो विधवाएं भी हैं, बालायें हैं तो युवतियाँ और वृद्धायें भी थीं। कुलीन वर्ग की हैं तो अछूत वर्ग की भी। जमींदार एवं उद्योगपति वर्ग की हैं तो किसान-मजदूर वर्ग की भी। किन्तु स्त्री होने के नाते सबका एक ही रूप है। वह है शोषित। उच्चवर्ग के होने के कारण वह शोषण भले ही कर ले किन्तु नारी होने के कारण वह शोषण से मुक्त नहीं हैं किन्तु प्रेमचंद की नारिया जुल्म, अत्याचार और शोषण में पिसती जरूर हैं परन्तु उसके खिलाफ आक्रोश और विद्रोह भी व्यक्त करती हैं।

प्रेमचंद ने हर प्रकार की नारियों का चित्रण किया है पर उनकी दृष्टि में नारियों का महत्व भारतीय संस्कृति के अनुरूप रहने में ही हैं। यही कारण है कि वे आदर्श रूप में उन्हें रखते हैं, भले ही उनका यथार्थ रूप का चित्रण करते हों।

प्रेमचंद नारियों के अनमेल विवाह, अशिक्षा, वेश्यावृत्ति आदि को नारी समाज का कलंक मानते हैं। पतित स्त्रियों के उद्धार के पक्षपाती हैं, विधवाओं के प्रति उनके मन में आदर है। दाम्पत्य जीवन वाली स्त्रियाँ ही उनकी आदर्श हैं, पाश्चात्य सभ्यता से प्रभावित होकर स्वच्छंद विहार करने वाली स्त्रियों के प्रति उनके मन में वितृष्णा है। नारी का आदर्श मातृत्व रूप और आदर्श पत्नीत्व रूप ही इन्हें प्रिय है।

प्रेमचंद की नारियाँ देशहित की भावना से ओत-प्रोत हैं। देशहित के सामने उनका निजी स्वार्थ कुछ भी नहीं है। राष्ट्रीय आंदोलन में वे अपनी प्रमुख भूमिका अदा करती हैं। प्रेमचंद ने नारी पात्रों के चरित्रांकन में बड़े ही मनोयोग से काम लिया है।[1]

हमारे शोध-परियोजना के विषय संबंधित यहाँ, उनके चार उपन्यास **'गोदान'**, **'निर्मला'**, **'सेवासदन'**, और **'गबन'** के प्रमुख स्त्री पात्रों का चरित्रांकन किया जायेगा।

4.2.1. गोदान : प्रमुख नारी-चरित्र

4.2.1.1. धनिया :

गोदान के नारी पात्रों में सबसे सशक्त और विद्रोही रूप धनिया का है। वह कृषक वर्ग की समस्त नारियों का प्रतिनिधित्व करती है। उसकी उम्र छत्तीस वर्ष की है किन्तु आर्थिक दुरावस्था के कारण उसके ''सारे बाल पक गये थे, चेहरे पर झुर्रियाँ पड़ गयी थी। देह सारी ढल गयी थी, वह सुन्दर गेहुँआ रंग साँवला हो गया था और आँखों से भी कम सूझने लगा था।''[2]

धनिया की इस दशा का कारण सामंती दुर्व्यवस्था है। वह अच्छी तरह समझ चुकी है कि पेट कितना ही काटो लगान बेबाक होना मुश्किल है। इसीलिए उसके मन में विद्रोह उठता है।

उसके मन में अन्याय के प्रति विद्रोह और छल-कपट के प्रति घृणा है। उसकी गाय को हीरा जहर देकर मार डालता है। दरोगा हीरा के घर की तलाशी लेने को कहता है पर होरी ऐसा कैसे होने दे तब दारोगा का मानना है कि इसी ने हीरा को फँसाने के लिए गाय को जहर दे दी है तो धनिया दारोगा को भी खरी-खोटी सुनाने में नहीं चूकती। वह हाथ मटका कर कहती है- ''हां, दे दिया, अपनी गाय भी यार डाली, फिर किसी दूसरे का जानवर तो नहीं मारा ? तुम्हारे तहकीकात में यहीं निकला है तो यही लिखें। पहना दो मेरे हाथ में हथकड़ियाँ। देख लिया तुम्हारे न्याय और तुम्हारे अकल की दौड़। ''[3]

धनिया की इस चुनौती के सामने दारोगा का दारोगापन गायब हो जाता है, दलाल नेताओं के मुख में कालिख सी लगा जाती है। उसमें सत्य का बल, वह जानती है कि इसमें दारोगा-मुखिया सबमें बाँट-बटवारा होने वाला है। उसके चरित्र में विद्रोह की ज्वाला धधकती है। उसके चरित्र का निर्माण विद्रोह के ताने-बानों से हुआ है।

सामाजिक रुढ़ियों के प्रतिरोध करने की अपूर्व साहस धनिया में है। वह झुनिया को अपने घर रखती है और पं. दातादीन से व्यंयात्मक रूप से कहती है- 'बड़े आदमियों की अपनी नाक जान से 'प्यारी होगी, हमें तो अपनी नाक इतनी प्यारी नहीं।[4] किसान वर्ग बिरादरी

से डरता रहता है। झुनिया के घर रखने पर बिरादरी के डाँट को होरी स्वीकार लेता है परंतु धनिया अस्वीकार करती है।

किन्तु यह धनिया और बिरादरी का संघर्ष वर्ग संघर्ष है। बिरादरी का डाँट शीर्षक वर्ग का कुचक्र है और धनिया का विरोध शोषित वर्ग की क्रान्ति की आवाज है। इस बिरादरी को कुचलने की क्षमता धनिया जैसे क्रान्तिकारी के हाथों में हमेशा रहेगी। शोषित वर्ग की विवशता का रूप होरी है और विद्रोह का रूप है धनिया, किंतु उसका विद्रोह 'हीरोपन' की ओट में ही सन्निहित है। उसकी व्यक्तित्व जुझाती है, बिरादरी से जूझती है और जरूरत पड़ने पर पति से भी जूझती है।

धनिया पति परायण स्त्री हैं। वह खुद भूखी रह कर देवरानियों के लिए जलपान की व्यपस्था रखती थी। वह वात्सल्यमयी है। झुनिया को पुत्रवधू स्वीकार कर भोला को फटकार देती है, बिरादरी का डाँट भी सहती है। सिलिया चमारिन को अपने घर आश्रय देती है। वह ऊपर से मोम की भाँति कठोर किन्तु भीतर से कोमल है। उसे लोकविश्वासों में आस्था है। टोने-टोटके के डर से आँगन में गाय बाँधती है। पंचों को शाप देने में नहीं चूकती। होरी की मृत्यु पर जमा-पूँजी जो उसके पास थी वहीं सवा रुपये उसके डंडे हाथ में रखकर पं. दातादीन से कहती है- ''महाराज, घर में गाय है, न बछिया, न पैसा। यही पैसा है, यही इनका गोदान है।''[5] और पछाड़ खाकर गिर पड़ती है। किन्तु धनिया की मूर्च्छा टूटेगी, वह उठेगी और बिरादरी से गिन-गिन कर बदला लेगी। इस हिंसक पंजे से मुक्ति का एक ही उपाय है- क्रांति। और धनिया उसी की प्रतिरूप है। उसकी बिरादरी में इतनी ताकत नहीं है कि इस धनिया को विनष्ट कर सके।[6]

4.2.1.2. मिस मालती :

मालती नवयुग की आधुनिकताओं की प्रतीक है। यह प्रसिद्ध दलाल मिस्टर कौल की बड़ी बेटी है जो इंग्लैंड से डाक्टरी पढ़कर आयी है और अब प्रैक्टिस करती है। आमोद-प्रमोद ही इनके जीवन का प्रमुख लक्ष्य था। वह नवयुग की साक्षात प्रतिमा है। गाल कोमल पर चपलता कूट-कूट कर भरी हुई। झिझक या संकोच का कहीं नाम नहीं, मेक-अप में प्रवीण, बाल की हाजिर जवाब, पुरुष मनोविज्ञान की अच्छी जानकार, आमोद प्रमोद को जीवन का तत्व समझने वाली, लुभाने और रिझाने की कला में निपुण। जहाँ हृदय का स्थान है वहाँ प्रदर्शन, जहाँ हृदय का स्थान है वहाँ हाव-भाव, मनोद्‌गारों पर कठोर निग्रह, जिसमें इच्छ या अभिलाषा का लोप सा हो गया।'' 7

मालती के चरित्र में पाश्चात्य शिक्षा का प्रभाव दिखता है। उनके अन्दर के विचार अलग हैं तो बाहर के भाव अलग। उनकी इन चरित्रगत विशेषताओं को लक्ष्य कर प्रेमचंद लिखते हैं- "मालती बाहर से तितली है, भीतर से मधुमक्खी। उनके जीवन में हँसी नहीं है, केवल गुड़ खाकर कौन जी सकता है ! और जिए भी तो वह सुखी जीवन न होगा। वह हँसती है, इसलिए कि उसे इसके भी दाम मिलते हैं। उसका चहकना और चमकना, इसलिए नहीं है कि वह चहकने को ही जीवन समझती है... नहीं वह इसलिए चहकती है और विनोद करती है कि इससे उसके कर्त्तव्य का भार कुछ हल्का हो जाता है।" [8]

मालती का जीवन भोग-विलासपूर्ण है। उनके इर्द-गिर्द विलासी मित्र भौरों की तरह मंडराया करते हैं। खन्ना मालती के मुख-दीप पर पतंग की तरह जान देते हैं। राय साहब, तरंवा, मिर्जा साहब, ओंकारनाथ सभी उसके उपासक हैं।

मिस मालती के विलास-प्रियता के तीन कारण थे। पहला उनके विलासी मित्रों का संसर्ग, दूसरा, पाश्चात्य शिक्षा और तीसरा, गृहस्थी के बोझ से दब कर मनोरंजन करना जिससे गृहस्थी का बोझ कुछ देर के लिए हल्का हो जाय। मालती के पुरुष मित्र उसके विलास भावना को भड़काते थे। पाश्चात्य शिक्षा के कारण वह पुरुष मित्र ज्यादे बनाती थी तथा फैशनपरस्त बन गयी थीं। जब वह वीमेन्स लोग में प्रो. मेहता का भाषण सुनने जाती है तो उसमें आज के लिए नये फैशन की साड़ी निकाली थी, नये काट के जम्पर बनवाये थे और रंग-रोगन और फूलों से खब सजी हुई थी, मानो उसका विवाह हो रहा हो। " [9]

मालती प्रेम का मामले में विवाहित अविवाहित सबसे प्रेम करती है। वह तितली की तरह है जो हर फूल का रसपान करती है। खन्ना को अपने रुप-जाल में फँसाती है तो प्रो. मेहता के प्रति भी आकर्षित होती है। पाश्चात्य सभ्यता ने भारतीय नारी के एकनिष्ठ प्रेम को भंग कर दिया है। पुरुष केवल यौन सुख प्राप्ति का साधन और प्रेम नारी हाथ का खिलौना रह गया है। सामाजिक-राजनीतिक विचारों में नर-नारी समानता की पक्षधर हैं।

किन्तु मालती एक कर्त्तत्व परायण वाला भी है। पिता के अपाहिज होने पर परिवार का पालन-पोषण करती है। उसकी यह भावना जो बीजवत छिपी थी प्रो. मेहता का सम्पर्क पाकर अंकुरित होकर पुष्पित और पल्लवित होती है। वह ग्रामीणों की सेवा करने लगती है और उनके त्यागमयी जीवन के सामने उसका विलासी और बनावटी जीवन तुच्छ लगने लगता है।

इस प्रकार मालती की कायापलट हो गयी थी। त्याग और सेवा की भावना को भर कर प्रेमचंद ने विलासिनी मालती को नारीत्व के उच्च-शिखर पर पहुँचा दिया है। "अब वह प्रेम की वस्तु नहीं श्रद्धा की वस्तु थी।" [10] सेवा और त्याग की पवित्र आँच में मालती की विलास भावना गल-तप कर उसे मानवता का उज्जल वरदान बना देती है।"

4.2.1.3. गोविन्दी :

गोविन्दी चन्द्र प्रकाश खन्ना की पत्नी है। वह पतिव्रता और कर्त्तव्य परायण महिला है। वह अपने सरल और स्वाभाविक जीवन में सुखी रहना चाहती है। भोग-विलास उन्हें छू नहीं सका।

खन्ना के पास विलास के सभी साधन, बँगला, कार, फर्नीचर, अपार धन है किंतु गोविन्दी के लिए इसका कोई मूल्य नहीं। सम्पत्ति की दिन-प्रतिदिन ऊँची होती हुई दीवार दम्पत्ति को दूर करती जाती थी, क्योंकि खन्ना का मन धन के लिए जितना ही ललचाया करता था, गोविंदी का मन उस जकड़न मुक्त होने के लिए छटपटाया करता था।

खन्ना का व्यवहार अपने ग्राहकों से जितना ही नम्र था, गोविंदी से उतना ही कटु। गोविंदी कविता लिखती है तो खन्ना मजाक उड़ाते हैं। तंग आकर रोती है। घर छोड़कर भागने का विचार करती है किन्तु प्रो. मेहता के समझाने पर घर आ जाती है।

गोविंदी धन को ही पापों की जड़ मानती है। खन्ना के मित्र को आग लग जाती है तो खन्ना रो पड़ते हैं। किंतु गोविंदी उन्हें ढ़ाढ़स बँधाती हुई कहती है- '' मेरे विचार में तो पीड़क होने से पीड़ित होना कहीं श्रेष्ठ है। धन खोकर अगर हम अपनी आत्मा को पा सकें तो यह कोई सौदा नहीं है। ''[12] अब तुम्हारे बच्चे आदमी बनेंगे। तुम्हें भी आत्मसेवा से वंचित होकर पवित्र जीवन मार्ग पर चलने का अवसर मिला है। इस प्रकार गोविंदी के विचार ऊँचे, हृदय विशाल, जीवन पवित्र और उज्ज्वल है।[13]

4.2.2. निर्मला : प्रमुख नारी-चरित्र :

4.2.2.1. निर्मला :

'' निर्मला '' निर्मला उपन्यास की प्रमुख पात्रा है। नारी-जीवन के कारुणिक और सामाजिक यथार्थ का सच्चा चित्र निर्मला के माध्यम से प्रेमचंद ने खींचा है। पिता की असामयिक मृत्यु के कारण निर्मला का विवाह तीन बच्चों के पिता बूढ़े, विधुर, तोताराम वकील से यह सोचकर कर दिया जाता है कि उसके भाग्य में जो सुख होगा, वह मिलेगा।

अनमेल विवाह के कारण निर्मला को कटुपूर्ण जीवन जीने के लिए बाध्य होना पड़ा है, किन्तु पति परायणा निर्मला की निष्ठा में किसी प्रकार का अन्तर नहीं पड़ता है, क्योंकि भारतीय संस्कारों ने उसे यही सिखाया है कि संसार में सबके सब प्राणी सुख-सेज पर ही तो नहीं सोते ? वह अपने को उन अभागों में गिन लेती हैं।

निर्मला सुन्दर है, स्वाभाविक है। जब उसे अपने पति के शक का आभास हो गया तो उसने सोचना आरंभ किया कि ऐसी कौन-सी बात है, जो इनकी (पति की) आंखों में खटकती

है। बहुत सोचने पर भी उसे अपने में ऐसी कोई बात नजर न आई तो क्या उसका संसाराम से पढ़ना उससे हँसना-बोलना ही इनके संदेह का कारण है तो फिर मैं पढ़ना छोड़ दूँगी, भूलकर भी मंसाराम से न बोलूंगी।

निर्मला व्यत्युन्नमति है। गहनों के चोरी चले जाने पर उसने रात की सारी घटना बयान कर दी पर सियाराम के सूरत के आदमी के अपने कमरे से निकलने की बात कही। निर्मला की जीवन में दारुण दुःख के अतिरिक्त कुछ न मिला। कृष्णा के विवाह के अवसर पर जब निर्मला घर पहुंची तो माँ मन मसोस कर रह गई। मुख पीला, चेटा गिरी हुई, अंग शिथिल, उन्नीसवें ही वर्ष में बुड्ढी हो गई थी। संक्षेप में निर्मला का परित्र एक ऐसी दुर्भाग्यशाली युवती का चरित्र है।

इस प्रकार निर्मला के जीवन की करुण कथा को चित्रित कर प्रेमचंद ने दहेज प्रथा के दुर्गणों के कारण अनमेल विवाह और उनसे होने वाली मनोवैज्ञानिक, पारिवारिक कठिनाइयों से अवगत कराया है।

4.2.3. सेवासदन : प्रमुख नारी-चरित्र :

4.2.3.1. सुमन :

दहेज प्रथा ने सुमन के अरमान और यौवन का गला घोंट कर उस लावण्यमयी युवती को दोहाजू गजाधर के गले में बाँध दिया। एक तो अनमेल विवाह उस पर गरीबी। पति शंकालु, क्रूर और कृपण। सुमन के सभी सपने उजड़ गये। सुमन द रोगा की बेटी थी उसमें दर्प थी, आत्मसम्मान थी। वह सुन्दर थी, युवती थी, उसके हृदय में अच्छा जीवन जीने की लालसा थी। सुमन के असंतोष का कारण गजाधर की गरीबी थी।

संगति भी अपना गहरा प्रभाव डालती है, सुमन पर भी वह असर पड़ा। पड़ोसिनी के गहने-कपड़े ने उसके मन में असंतोष भरा तो उसके सामने रहने वाली भोली वेश्या का सम्मानपूर्ण और भोगविलास पूर्ण जीवन ने उसके मन में सम्मान पूर्वक जीवन जीने की लालसा उत्पन्न की। सुमन पहले भोली वेश्या से घृणा करती थी किन्तु मौलूद उत्सव में उसके यहां बड़े लोगों को सम्मिलित होते देख आश्चर्य करती है। ठाकुर द्वारे में भोली का सम्मान देखती है। पद्मसिंह सुमन को घर से निकाल देती है।

सुमन वेश्या भले ही बन जाती है पर उसे इस दृष्टि मोह नहीं, वह विट्ठलदास और पद्मसिंह की बातों को स्वीकार कर विधवाश्रम में चली जाती है। सुमन में सौन्दर्याभिमान, आदर पाने की लालसा, दूसरे की वस्तु देखकर मन में वैसी ही पाने की अभिलाषा, अहंकार, विलास-प्रियता इतनी भी कि वह पति से विद्रोह कर बैठी। अपनी परिस्थितियों से सामंजस्य

न कर सकी। इसलिये वह बाद में पश्चाताप करती है। वह वेश्यालय छोड़ वनिताश्रम में आ जाती है। उसके जीवन के सुधार का यही मार्ग था, हिन्दू नारी! पति को छोड़ सुखी नहीं रह सकती किन्तु दहेज प्रथा ने प्रकारान्तर से कितने हो सुमनों को वेश्या बनाया।

अत: पुत्र-विक्रय की यह प्रथा बंद होनी चाहिए।

4.2.4. गबन : प्रमुख नारी-चरित्र :

4.2.4.1. जलपा :

अबोध बालिका जलपा ने गुड़ियों का खेल नहीं खेला, वह आभूषणों से खेल, खेलकर बड़ी हुई थी। गहने उसे अच्छे लगते थे, वह उसे प्रिय थे। वही उसके खिलौने थे, इसी में पलकर वह बड़ी हुई थी। विवाह के चढ़ाव में चन्द्रहार न पाकर वह कितनी दुखी हुई थी। इसका कारण था बचपन से ही आभूषणों का खेल खेलमा और बड़े-बूढ़ी के मुंह से गहनों की प्रशंसा सुनना।

गहनों से स्त्रियाँ सुंदर लगती हैं, सुन्दर लगता उनका मनोविज्ञान हैं, अत: गहने उसके सौदंर्य के प्रसाधन हैं- उसके खिलोने हैं, परन्तु इसके पीछे उनका आर्थिक दृष्टिकोण भी होता है। वही उनका आर्थिक हिस्सा होता है। वही उनकी निजी पूँजी होती है, उनका गहनों पर एकाधिकार होता है-इसलिए आभूषण उन्हें प्रिय होने हैं। इसीलिए गहनों के चोरी हो जाने पर जलपा मूर्च्छित होकर गिर पड़ती है। रमानाथ से वह खिंची-खिंची रहने लगती है और कभी-कभी जली-कटी भी सुना देती देती है, और जलपा के जब गहने बन जाते हैं तो वह पति-सेवा करने लगती है, वह प्रसन्न रहने लगती है, क्योंकि जलपा को गहनों से प्रेम था और रमानाथ को जलपा की रुप और जवानी से। लेकिन यह अवस्था की चाह है। वरना यही जलपा पति के लिए अपने गहने बेंच डालती है और यही रमानाथ प्रिय जलपा को छोड़कर भाग जाता है।

किन्तु जलपा का चारित्रिक विकास गहनों के बेचने के बाद ही होता है। पति-प्रेम के सामने आभूषण-प्रेम नगण्य है। वह पति परायण नारी है। पति के गायब होने के लिए स्वयं को अपराधिनी समझती है। जलपा में स्वाभिमान है। वह माँ भेजे हुए चन्द्रहार लौटा देती है, क्योंकि न तो वह किसी का एहसान लेना चाहती है और न किसी के दान पर जीना चाहती है। वह अपनी चतुराई द्वारा शतरंज का नक्शा बनाकर पति को ढूंढ़ निकालती है।

आभूषण प्रेमी जलपा के चरित्र के यह चरम विकास है। वह गहनों को ठुकराकर पति को गबन से बचाती है, और क्रान्तिकारियों के लिए पति को ठुकरा देती है। देश प्रेमी के लिए उसमें सम्मान है तो देश-द्रोही के लिए रोष और घृणा। वह सच्ची देशभक्त नारी है जो चन्द्रकार के संकीर्ण दायरे से निकलकर मानव जाति तथा देश प्रेम की विशाल सीमा तक पहुँच गयी।''14

किशोरावस्था की श्रृंगार प्रियता की जगह अब उसके हृदय में, मानव-प्रेम, देश-प्रेम और त्याग के भाव भर गये। जलपा के चरित्र में देशभक्ति का बीज बोकर प्रेमचंद ने भारतीय नारियों के लिए देशभक्ति के मार्ग पर चलने का संदेश दिया है।

4.3. प्रेमचंद के उपन्यासों में नारी का स्वरुप

(गोदान, निर्मला, सेवासदन और गबन के विशेष संदर्भ में) :

4.3.1. आर्थिक स्वरूप :

यद्यपि वर्तमान भारतीय समाज में कन्या को बराबर और सादर के साथ पाला-पोसा जाता है, तथापि उसका जन्म सम्पूर्ण परिवार को कहीं भीतर ही भीतर गम्भीर बना देता है। उसके भावी जीवन की चिंता से समस्त कुटुम्ब और विशेषत: माता-पिता अत्यधिक ग्रस्त हो जाते हैं। बहुधा कन्या किसी भी अपरिचित अनजान वर की सौंप दी जाती है, फिर विवाह बन्धन को स्थायी रुप से अक्षुण्ण बनाये रखना कन्या का कर्त्तव्य हो जाता है। 'विवाह' के द्वारा नारी अपने आपको आर्थिक दृष्टि से सुरक्षित बनाती है। पति की आर्थिक स्थिति ही नारी को समाज में प्रतिष्ठित करती है। भारतीय समाज में विधवा-प्रथा, पर्दा-प्रथा, बहु-पत्नी, विवाह आदि सामाजिक कुप्रथाओं से त्रस्त निरीह नारी को जीवित रहने के लिए यही एकमात्र आर्थिक स्वावलम्बन शेष था कि वह वेश्या बनकर शरीर बेचे। नारी साम्पत्रिक अधिकारों से वंचित थी। अत: नारी के स्वावलम्बी बनने का एकमात्र पथ यही था।

प्रेमचंद ने भी वेश्यावृत्ति को नारी की आर्थिक विवशता ही कहा है। एक जागरुक कलाकार होने के नाते उन्होंने युगीन आर्थिक समस्याओं में ग्रस्त नारियों का सम्यक् निरुपण किया है।

प्रेमचंद ने नारी की आर्थिक पराधीनता का चित्रण प्राय: सभी रचनाओं में थोड़ा बहुत किया है। युगीन आर्थिक परिस्थिति तथा सामाजिक बाधाओं के कारण अर्थोपार्जन में नारी की विवशता का विशद चित्रण भी प्रेमचंद ने अपनी रचनाओं में किया है। गोविंदी (गोदान), निर्मला (निर्मला), सुमन (सेवासदन), रतन (गबन) आदि आर्थिक दृष्टि से पूर्णतया पराधीन और पुरुष पर अवलम्बित नारी-पात हैं।

'गोविंदी' (गोदान) मि. खन्ना की पत्नी है। मि. खन्ना पूंजीपति हैं। एक ऐसा पूंजीपति जिसे पैसों से ही सारा सुख तथा आनंद की उपलब्धि होती है। गोविंदी की विचारधारा मि. खन्ना के बिल्कुल विपरीत है; लेकिन वह कुछ भी कह नहीं पाती। पत्नी को पति का ही आश्रय लेकर चलना पड़ता है। अत: गोविन्दी भी अपने पति की कार्यावली को मौन होकर स्वीकार कर लेती है। गोविन्दी विद्रोह नहीं कर पाती। मि. खन्ना 'अक्सर क्रोध में अपशब्द

कह बैठता, शिष्टता उसके लिए दुनिया को ढकने का एक साधन थी, मन का संस्कार नहीं, ऐसे अवसरों पर गोविन्दी अपने एकान्त कमरे में जा बैठती और रात की रात रोया करती।"[15]

'निर्मला' (निर्मला) प्रौढ़ तोताराम के साथ 'पत्नी' धर्म को निबाहने का भरसक प्रयास करती है। सामाजिक विधान उसे तोताराम की सेवा के लिए बाध्य करता है और निर्मला अपने धर्म का निष्ठा के साथ पालन करना चाहती है। कन्या के लिए विवाह के पश्चात् पति ही एकमात्र आर्थिक स्तम्भ होता है जिसे महसूस करने के बाद निर्मला निर्वाक हो जाती है। आर्थिक अवलम्बन का आधार 'पति' की प्रौढ़ता को देखकर निर्मला चिन्तित होती है और अपनी नवागन्तुक बिटिया के लिए 'दहेज' के पैसे लड़की के जन्म के साथ ही साथ जुटाने का प्रयत्न करती है। निर्मला के सामने पैसे इकट्ठा करने का एकमात्र पथ है-सांसारिक खर्चों से बचाव।

निर्मला उपन्यास की रुक्मिणी को पति की मृत्यु के बाद अपने निर्वाह के लिए भाई तोताराम का आश्रम लेना पड़ता है। सम्भ्रांत और सुशिक्षित परिवारों में भी विधवा की दर्जा नौकर-चाकर से अच्छी नहीं होती है। मुंशी तोताराम विधवा बहन का पालन-पाषण किस दृष्टि से करते हैं, यह उनके कथन से ज्ञान होता है। वे निर्मला से कहते हैं- 'मैंने सोचा था कि विधवा है, अनाथ है, पाव भर आटा खाएगी, पड़ी रहेगी। जब और नौकर-चाकर खा रहे हैं तो यह तो अपनी बहन ही है। लड़कों की देख-भाल के लिए एक औरत की जरूरत भी थी रख लिया, लेकिन उसके यह माने नहीं है कि वह तुम्हारे ऊपर शासन करे।' [16]

'सेवासदन' उपन्यास में सुमन गजाधर की आर्थिक कठिनाइयों की भागीदार है।

प्रेमचंद युग में पति की सम्पत्ति में विधवा का थोड़ा भी हिस्सा नहीं होता था इसलिए सम्मिलित परिवार में उसकी दुर्दशा होती थी। जिस घर की वह स्वामिनी होती थी, पति के मरणोपरान्त उस घर मे उसकी कोई कद्र नहीं होती थी। प्रेमचंद ने इस समस्या को भी अपनी रचनाओं में उभारा है। 'रतन' ऐसे ही नारी-पात्र हैं।

'गबन' उपन्यास की 'रतन' के कोई पुत्र नहीं है। अत: उसके पति की कमाए हुए लाखों की सम्पति पर एक में दूसरों का हक हो जाता है और वह राह की भिखारिन हो जाती है- 'वही रतन जिसमें रुपयों की कभी कोई हकीकत न समझी, इस एक महीने में रोटियों की भी मोहताज हो गई थी।' [17]

'सेवासदन' की 'सुमन' पति द्वारा घर से निकाली जाने पर दुनिया के वास्तविक पक्ष का सामना करने के लिए तैयार हो जाती है। लेकिन जिस सुमन के पास पति के पैसे ही एकमात्र आधार था, पति द्वारा निष्कासित होने पर बेचैन हो जाती है और कपड़े सीकर अपना

गुजारा करना चाहती है। सुमन का कहना है– 'मैं जानती हूं कि मैंने अत्यन्त निकृष्ट कर्म किया है। लेकिन मैं विवश थी, इसके सिवा मेरे लिए और कोई रास्ता न था। ... पद्म सिंह के घर से निकल कर मैं भोलीबाई की शरण में गयी। मगर उस दशा में भी मैं इस कुमार्ग से भागती रही। मैंने चाहा कि कपड़े सीकर अपना निर्वाह करुं, पर दुष्टों ने मुझे ऐसा तंग किया कि अंत में मुझे इस कुएं में कूदना पड़ा।18

प्रेमचंद ने आत्मनिर्भर नारी के स्वरूप पर भी प्रकाश डाला है। उन्होंने आत्मनिर्भर नारी के दो वर्ग की है। (1) ग्रामीण परिवेश और आत्मनिर्भर तथा (2) शहरी परिवेश में शिक्षा और आत्मनिर्भरता।

गोदान की धनिया, चुहिया, सिलिया आत्मनिर्भर नारी हैं ग्रामीण परिवेश भी। 'धनिया' आत्मनिर्भरता से परिपूर्ण नारी पात्र है। आर्थिक परवशता एवं आर्थिक चिन्ताओं से विवश धनिया सिर्फ नारी वर्ग की आयु में ही छब्बीस वर्ष की आयु में ही बुढ़ापे को अपना लेती है। शारीरिक श्रम के द्वारा धनिया अपनी स्थिति को सुधार लेती है। धनिया जीवन में अन्याय के सिवा सब कुछ सह सकती है। धनिया आत्मनिर्भर होने के कारण होरी से भी डरता।

चुहिया (गोदान) एक आत्मनिर्भर नारी है। अपनी रोटी वह खुद कमाती है। लकड़ी बेचकर अपना पेट पालती है। 'सिलिया' भी आर्थिक दृष्टि से स्वावलंबी है। मातादीन के साथ सम्पर्क स्थापित होने पर भी उसका काम करके अपना जीवन निर्वाह करती है।

प्रेमचंद ने मालती के द्वारा गोदान में शिक्षिता नारी की आत्मनिर्भरता की ओर संकेत किया है। गोदान की मालती इंग्लैंड से डाक्टरी की शिक्षा लेकर लौटती है और उसे अपने पेशे के रूप में अपनाकर जीवन निर्वाह करती है। मालती को प्रेमचंद में नवयुग की साक्षात् प्रतिमा कहा है। किन्तु विदेशी शिक्षा प्राप्त मालती की कुछ चरित्रगत विशेषताएं हैं। उसके जीवन में भी स्वार्थ, भौतिक सुखोपलब्धि और विलासिता की प्रधानता है। मालती पर आधुनिक शिक्षा और सभ्यता का प्रभाव पड़ा। आर्थिक दृष्टि से आत्मनिर्भर मालती का पुरुष-समाज में मान है। वह एक अधिकार के साथ इस समाज में प्रवेश करती है। आर्थिक स्वावलम्बन ही उसे समाज में प्रतिष्ठा देता है। मर्यादा और सम्मान देता है।

4.3.2. सामाजिक स्वरूप :

प्रेमचंद समाज के चित्रकार थे। स्वाधीनता पूर्व काल की सामाजिक दशा ने उन्हें चिन्तनशील बनाया था। फलत: उन्होंने समाज की सभी प्रकार की समस्याओं पर विचार किया था और उसका ही प्रतिबिम्ब उनके साहित्य में उभर आया है। उनके साहित्य को सामाजिक परिप्रेक्ष्य में देखने से उनकी सामाजिक धारणा का स्वरूप स्पष्ट होता है।

समाज-व्यवस्था के परिणामस्वरूप नारी की यातना का जो चित्र प्रेमचंद ने प्रस्तुत किया है, उस पर विहंगम दृष्टि डालने से हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि इन साहित्यकारों ने नारी-जीवन की भली-भांति पहचाना है। नारी को जीवन के हर पहलू में - विवाह से पूर्व, विवाह के पश्चात तथा पति की मृत्यु हो जाने पर इस दुनिया की जिन विषमताओं का सामना करना पड़ता है।

प्रेमचंद ने पूरी सहानुभूति के साथ चित्रण किया। यह भी दिखाया कि इन विषम परिस्थितियों का सामना करते हुए भी नारी अपनी सत्ता को प्रतिष्ठित करने के लिए निरन्तर प्रयास करती रहती है। इन्होंने विवाह-पूर्व तथा विवाह पश्चात् आर्थिक कठिनाइयों की शिकार नारी को मनोदशा का चित्रण बहुत खूबी के साथ किया है।

'रूपा' के माध्यम से प्रेमचंद ने नारी की मजबूरी को शीर्ष स्थान दिया है। होरी के उधार चुकाने के लिए रूपा बूढ़े पति के घर में पैर रखती है। लेकिन रूपा इस मजबूरी से खुश ही है, दु:खी नहीं, क्योंकि विवाह-पूर्व आर्थिक अभाव के कारण वह अपनी इच्छा-आकांक्षाओं की पूर्ति नहीं कर पायी थी, जिसे पूरा करने की लालसा रूपा के अन्तर्मन में विद्यमान है। उस समाज व्यवस्था में एक नारी को अपनी छोटी-सी आकांक्षा की पूर्ति के लिए कितनी ज्यादा कीमत चुकानी पड़ती है। नारी जीवन के संदर्भ में इस विडम्बना को प्रेमचंद ने पहचाना है। 'सुमन' (सेवासदन) भी 'रूपा' (गोदान) की तरह अच्छा खाने, अच्छा पहनने का शौक रखती है। जो एक नवयुवती के लिए स्वाभाविक ही है। विवाह से पूर्व 'निर्मला' (निर्मला) भी रंगीन स्वप्न देखती है, कल्पना की उड़ाने भरती है, लेकिन अर्थ-संकट विकराल रूप लेकर सामने आ जाता है, जो सुमन को वेश्या बनाता है और निर्मला को पागला। प्रेमचंद ने आर्थिक कठिनाइयों से उद्बुद्ध नारी-यातना का यथार्थ चित्र प्रस्तुत किया है।

4.3.3. धार्मिक स्वरूप :

सामाजिक जीवन में हिंदू नारी 'धार्मिक रुढ़ियां' तथा अंधविश्वासों से जकड़ी हुई है। प्रेमचंद के उपन्यासों में धर्म की विकृतियों का चित्रण नारी पात्रों के माध्यम से हुआ है। अशिक्षित और अज्ञानी होने के कारण हिन्दू अबला धर्म के सही अर्थ को नहीं समझ पाती। युग-युग से जो रुढ़ियां समाज में विकसित होती रही हैं उन्हीं को वह धर्म समझ बैठती थी। परिणामत: अनेक कुरीतियों को भारतीय नारी ने धार्मिक निष्ठा से ग्रहण किया और आजीवन उन्हीं के निर्वाह में रत रही। प्रेमचंद ने एक ओर रुढ़ियां और अंधविश्वासों से जकड़ी हुई नारी के दलित रूप का चित्रण किया तो दूसरी ओर कुछेक ऐसे नारी पात्रों को भी सामने रखा, जो इन रुढ़ियों और अंधविश्वासों को ही अपने जीवन में ज्यादा महत्व देकर अपने आप को धन्य मानती हैं।

प्रेमचंद धर्म सम्बन्धी विचार-अंधविश्वास और रुढ़ियों को तोड़ते हैं। उनके पुरुष तथा नारी पात्र समाज में परिव्याप्त रुढ़ियों और अंधविश्वासों के विरुद्ध आवाज उठाते हैं और विद्रोह की घोषणा करते हैं।

प्रेमचंद परंपरागत धर्म एवं उसके आडम्बर के कटु आलोचक थे। उन्होंने धर्म के बाह्याडम्बर एवं उसके परिणामस्वरूप समाज में फैले हुए अनाचार का यथार्थ चित्र प्रस्तुत करते हुए परम्परागत धर्म की निरर्थकता को सिद्ध कर दिया है।

'गोदान' की 'धनिया' एक विद्रोही नारी है, जिसका विद्रोह रुढ़ियों और अंधविश्वासों के प्रति ही है।

गर्भवती झुनिया (गोदान) को आश्रय देने के कारण गांव में हुक्का-पानी बन्द होने की नौबत आ जाती है। लेकिन धनिया इससे जरा भी नहीं डरती है। होरी के दण्ड भरकर फिर से समाज में प्रतिष्ठित होने की बात से धनिया गरज उठती है। धनिया रुढ़ियों और अंधविश्वासों के आगे झुकना नहीं जानती। वह धार्मिक रुढ़ियों और अंधविश्वासों को पैरों तले कुचल कर 'मानवतावाद' को प्रतिष्ठित करती है।

झुनिया को आश्रय देकर धनिया प्रचलित रुढ़ियों-अंधविश्वासों के प्रति विद्रोह की घोषणा करती है और धार्मिक अंधविश्वासों की जगह 'मानवता' की प्रतिष्ठा करती है।

'गोदान' में प्रेमचंद ने रुढ़ियों और धार्मिक अंधविश्वासों पर आघात किया है। उन्हें तोड़ने की चेष्टा की है तथा कुछ हद तक सफल भी हुए। 'सिलिया' एक चमारिन है और 'मातादीन' एक ब्राह्मण लड़का। लेकिन मातादीन और सिलिया एक दूसरे को चाहने लगते हैं और आखिर में मातादीन सिलिया के पास ही चला जाता है - उसे पत्नी रूप में अपना लेता है। यहाँ प्रेमचंद रुढ़ियों और अंधविश्वासों को तोड़ते हुए आगे बढ़ जाते हैं।

4.3.4. राजनीतिक प्रभाव एवं राष्ट्रीय स्वरूप :

प्रेमचंद युगीन राजनीति से बहुत ज्यादा प्रभावित थे जिसका प्रतिफलन उनकी रचनाओं में उपलब्ध है। प्रेमचंद के कथा-साहित्य में राजनीतिक परिस्थिति का सम्यक् निरूपण हुआ है। बंग-भंग आन्दोलन से प्रभावित होकर प्रेमचंद ने 'संसार का सबसे अनमोल रत्न' नामक सर्वप्रथम कहानी लिखी, जो 1907 में 'जमाना' में प्रकाशित हुई। इसके बाद चार-पांच कहानियाँ लिखीं, जो 'राष्ट्र-प्रेम' तथा स्वदेशी-भावना' से भरपूर थीं। इन कहानियों को 'सोजे वतन' नाम देकर एक संग्रह के रूप में सन् 1909 में प्रकाशित किया, लेकिन इस कहानी संग्रह को राज्य द्रोह की रचना घोषित करके प्रकाशित होने के कुछ महीनों के बाद ही जब्त कर लिया।

राजनीतिक परिस्थिति के परिवर्तन के साथ ही प्रेमचंद की रचनाएं भी परिवर्तित हो गईं। सन् 1921 का असहयोग आंदोलन ने प्रेमचंद की रचनाओं को सजीव कर दिया। गाँधीजी द्वारा परिचालित 'असहयोग आंदोलन' में प्रेमचंद भी शामिल हो गए। उन्होंने सरकारी नौकरी से इस्तीफा दे दिया और अपनी स्वतंत्र विचारधारा और निर्भीकता से लिखने लगे।

प्रेमचंद का राष्ट्रीय स्वरूप ज्यादातर कृषक-वर्ग को लेकर ही है। प्रेमचंद किसान आंदोलन की चर्चा पहले करते हैं तथा राष्ट्रीय आंदोलन की बाद को। प्रेमचंद ने अपने कथा-साहित्य में सिर्फ ब्रिटिश साम्राज्यशाही का उत्पीड़न ही नहीं दिखाया, बल्कि जमींदारों के शोषण का भी वर्णन किया है।

प्रेमचंद स्वराज्य के पुजारी थे। प्रेमचंद युगीन उपन्यासकारों में नारी जागरण की समस्या पर सबसे अधिक गंभीरता से विचार किया प्रेमचंद ने। उनके नारी पात्र जालपा (गबन) में राष्ट्रीय आंदोलन का नेतृत्व करती हैं। और कहीं-कहीं सहयोगिनी के रूप में भी आती हैं। 'जालपा' के चरित्र में उपलब्ध न्यायप्रियता, सत्यवादिता, दृढ़ता एवं सेवा-धर्म-युगीन राजनीतिक नेता की चारित्रिक विशेषताएं हैं।

'देशभक्त' की दृष्टि से देवीदीन की गंवार पत्नी (गबन) का चरित्र भी कम महत्वपूर्ण नहीं है। देवीदीन की पत्नी अपने दो जवान बेटे को स्वदेशी आंदोलन में भाग लेने के लिए आगे बढ़ा देती है। दोनों ही स्वदेशी आंदोलन में अपने प्राणों की भेंट चढ़ाते हैं। इससे देवीदीन की पत्नी अपने आपको धन्य मानती हैं। वह देश के लिए सब कुछ न्यौछावर कर सकती है।

प्रेमचंद के कुछेक नारी-पात्र विद्रोहिणी के रूप में सामने आती हैं। युगीन राजनीतिक परिस्थिति, सामाजिक-अव्यवस्था, शोषक-वर्ग का अमानवीय कार्य-कलाप तथा नौकरशाही के अत्याचार से पीड़ित जनता-सामाजिक एवं राजनीतिक अव्यवस्था का विरोध करती है, वे अपने आत्मसम्मान, अस्तित्व तथा व्यक्तिगत मतवाद को प्रतिष्ठापित करने के लिए आवाज उठाती है। यह आवाज सिर्फ नागरिक जनता तक ही सीमाबद्ध नहीं है, ग्रामीण जनता भी विद्रोह की घोषणा करती है। यह विद्रोह राष्ट्रीय जागृति का ही परिणाम है। धनिया (गोदान) की ऐसी भी नारी-पात्र है, जो जनता-जागृति का मूर्त रूप है।

4.3.5. नैतिक स्वरूप :

प्रेमचंद की नैतिक मान्यताएं मानवीय संवेदना के धरातल पर प्रतिष्ठित हैं, जिनकी वजह से वे उन नैतिक प्रतिमानों के बाहर आ जाते हैं, जो एक परम्परीय और प्राय: रुढ़िग्रस्त समाज के प्रतिमान हो सकते हैं। मानवीय संवेदना के स्तर पर खड़े होकर पात्रों के जीवित संसार को मानवीय नैतिकता की दृष्टि से देखना ही उन्हें नयी नैतिकताओं की प्रतिष्ठा की सम्भावनाएं जुटाने का अवकाश देता है।

प्रेमचंद ने परिस्थितिवश गिरी हुई नारी को हेय दृष्टि से नहीं देखा, बल्कि उसमें मानवीय गुणों की कल्पना कर उसे एक स्वस्थ धरातल पर प्रतिष्ठित करने का प्रयास किया है। सुमन (सेवासदन) परिस्थितिवश 'वेश्यावृत्ति' को अपनाती है, किन्तु कहीं भी उनके घृणित जीवन की झलक नहीं पाई जाती। इनकी नैतिक मान्यता सिर्फ पेशा तक ही सीमित नहीं है- व्यक्ति के जीवन में उसके प्रतिफलन पर भी इनकी दृष्टि निबद्ध है। कथाकारों ने नारी को व्यापक मानवी के रूप में देखा है।

'गोदान' की मालती की नैतिकता सराहनीय है। मालती विदेशी शिक्षा प्राप्त डाक्टर है, जो उच्च वर्गीय समाज की शोभा है। प्रो. मेहता के परोपकारी, सिद्धांत-प्रिय व्यक्तित्व से प्रभावित होकर मालती अनायास ही प्रो. मेहता को चाहने लगती है। मेहता भी मालती के प्रति धीरे-धीरे आकृष्ट हो जाता है। हर एक व्यक्ति की निजी विचारधारा है- अभिमत है- जिसके आधार पर वैयक्तिक नैतिकता का विकास होता है। मालती का प्रेम सम्बन्धी अभिमत उसे वैयक्तिक नैतिकता के आधार पर खड़ा करने के लिए पहुंचाता है।

झुनिया (गोदान) ग्रामीण पात्र होते हुए भी नैतिकता के धरातल पर उसका व्यक्तित्व कम सराहनीय नहीं है। समाज की विभिन्न परिस्थितियों का सामना करने के लिए व्यक्ति अपनी निजी राह ढूंढ़ लेता है और उसी रास्ते से चलना पसंद करता है, जिसे वैयक्तिक की संज्ञा दी जाती है। झुनिया एक बाल-विधवा है, जो होरी के पुत्र गोबर को चाहती है। समाज की दृष्टि से यह चाह नियम विरुद्ध है, किन्तु व्यक्तिगत अभिमत के अनुसार यह प्रेम स्वर्गिक मर्यादा लिए हुए है। झुनिया को गोबर से प्यार है और फलस्वरूप झुनिया गर्भवती हो जाती है। यद्यपि झुनिया का गर्भवती रूप समाज की दृष्टि से हेय है, किन्तु व्यक्तिगत रूप से झुनिया के प्रेम की स्वाभाविक परिणति है। अतः झुनिया गर्व अनुभव करती है। गोबर की मां धनिया के सहारे झुनिया को समाज में स्थान प्राप्त होता है। यहां पर झुनिया की वैयक्तिक नैतिकता सामाजिक नैतिकता में परिवर्तन हो जाती है।

4.4. प्रेमचंद के साहित्य में नारी : सम्यक् मूल्यांकन :

प्रेमचंद साहित्य में नारी की यौन-शुचिता एवं पवित्रता के अनेक प्रसंग मिलते हैं। यौन-शुचिता का यह प्रश्न नारी के सभी रूपों से जुड़ा है, चाहे वे कुमारी हैं, प्रेमिका हैं, पत्नी है, विधवा है या कोई और रूप है।

'सेवासदन' की सुमन ने गृहिणी बनने के स्थान पर इन्द्रियों के आनंद भोग की शिक्षा पायी थी तथा उसे अपने रूप-सौंदर्य का अभिमान था। वह इसी कारण मुहल्ले के शोहदों को चिक की आड़ में अपने शारीरिक सौंदर्य को दिखाने में असीम आनंद का अनुभव करती थी। इस प्रकार सुमन स्वयं ही अपनी पवित्रता भंग करती है और गृहिणी से वेश्या बनती है।

'निर्मला' उपन्यास में सतीत्व भंग के दो प्रसंग हैं। निर्मला का जीवन और चरित्र ही यौन-अतृप्ति का प्रतीक है। वह अपने पति तोताराम में पति को नहीं पिता को देखती है, क्योंकि उसकी अधेड़ आयु का एक आदमी उसका पिता था। अत: वह अपने सौतेले बड़े पुत्र मंसाराम से हँसती-बोलती है तो उसकी विलासिनी कल्पना उत्तेजित और तृप्त होती है और अपनी बहन कृष्णा से स्पष्ट रूप में कहती है कि यह मैं जानती हूं कि अगर उसके मन में पाप होता तो मैं उसके लिए सबकुछ कर सकती थी। इसका परिणाम यह हुआ कि मंसाराम की मृत्यु हुई और निर्मला पति की निगाह में गिर गयी। परंतु निर्मला ने फिर अपनी यौन-अतृप्ति का मार्ग खोजा और पति के सियाराम को खोजने जाने पर वह अपनी सहेली के पति डॉक्टर भुवन की ओर आकर्षित हुई और वह शृंगार करके सुधा के घर जाने लगी, परंतु डॉक्टर भुवन जैसे ही एकांत में अपना प्रेम प्रकट करता है तो निर्मला वहाँ से भाग खड़ी होती है। सुधा इस घटना को जान लेती है तो अपने पति डॉक्टर भुवन की ऐसी भर्त्सना करती है कि भुवन आत्महत्या कर लेता है, पर सुधा ऐसे सौभाग्य से वैधव्य को पसंद करती है।

'गोदान' में नारी के सतीत्व, यौन-पवित्रता तथा उसके भंग होने के कुछ प्रेम-प्रसंग है, जो सामाजिक प्रश्नों को उत्पन्न करते हैं। धनिया सती-साध्वी पत्नी हैं जिसने होरी के सिवा किसी पुरुष को आँख भरकर देखा न था। लेकिन होरी में कुछ छेड़छाड़ की प्रवृत्ति थी। होरी दुलारी सहुआइन की दुकान पर तम्बाकू आदि लेने जाता था तो कुछ चुहल करता था। धनिया इस पर होरी से कई-कई दिन नहीं बोलती थी, घर का काम भी न करती थी और एक बार तो वह नैहर भाग गयी थी। उपन्यास में गोबर तथा विधवा फुनिया के प्रेम संबंध, फुनिया के पुरुषों की कामुकता के अनुभव, पंडित को बलात्कार की चेष्टा पर पीटना, गोबर से... गर्भवती होता आदि कथा-प्रसंग नारी के यौन-सम्बन्धों के कई रूपों को उद्‌घाटित करते हैं। फुनिया को गोबर गर्भवती अवस्था में छोड़कर भाग जाता है तो उस कुलटा, कलंकिनी तथा को होरी और धनिया दोनों उसे घर में आश्रय देते हैं और छाती से भगाते हैं। उनके बेटे ने उसकी बाँह पकड़ी है तो उसका निर्वाह करना है। उपन्यास में मातादीन-सिलिया का प्रसंग भी कुछ ऐसा ही है। मातादीन तन-मन लेकर भी सिलिया की उपेक्षा करता था और काम करने की मशीन समझता था, लेकिन उसके माता-पिता अपने भाई बंधु के साथ आते हैं और मातादीन के मुंह में हड्‌डी डाल देते हैं। मातादीन ने सिलिया की इज्जत बिगाड़ी है।

मेहता और मालती के प्रसंग में मालती स्वच्छंद नारी है। लेखक के अनुसार मालती बाहर से तितली और अंदर से मधुमक्खी है, लेकिन उसमें तितलीपन क्रमशः कम होता है और मधुमक्खी है, लेकिन उसमें तितलीपन, क्रमशः कम होता जाता है और मधुमक्खी के समान सेवा-कर्म में लग जाती है। वह प्रेम को शरीर की नहीं आत्मा की वस्तु मानती है तथा सेवा त्याग एवं मानवतावादी दृष्टि प्रमुख ही जाती है। 'गोदान' में ही रायसाहब की बेटी मिनाक्षी

के तलाक के प्रसंग में प्रेमचंद ने उस समय के नारी-मुक्ति आंदोलन की चर्चा की है और लिखा है मिनाक्षी समाचार पत्रों में स्त्रियों के अधिकारों की चर्चा पढ़ती थी और जनाना क्लब जाने लगी थी। यहां शिक्षित ऊँचे कुल की महिलाएं आती थीं और वे वोट, अधिकार और स्वाधीनता तथा नारी-जागृति की खूब चर्चा करती थी, जैसे पुरुषों के विरुद्ध कोई षड्यन्त्र रचा जा रहा हो। इनमें अधिकांश वही देवियों थीं जिनकी अपने पुरुषों से न पटती थी, जो नयी शिक्षा के कारण पुरानी मर्यादाओं को तोड़ डालना चाहती थी। कई युवतियां भी थीं जो डिग्रियाँ ले चुकी थीं और विवाहित जीवन को आत्मसम्मान के लिए घातक समझकर नौकरियों की तलाश में थीं।

प्रेमचंद के नारी-दर्शन में इस प्रकार दोनों ही रूपों में नारी की यौन-शुचिता की रक्षा का कठोर आग्रह है- एक, पुरुष द्वारा नारी का धन-बल तथा छल-बल से उसका शील-हरण तथा दूसरा नारी का स्वयं अपने सतीत्व को बाजार में बेचना। प्रेमचंद का युग नारी उत्थान का युग था तथा एक नयी नारी का जन्म हो रहा था। यह आधुनिक नारी परंपरागत भारतीय नारी की बुनियाद पर ही निर्मित और विकसित हो रही थी। वह अपनी परंपरा में ही आधुनिक बन रही थी। और इसी कारण घर, परिवार, पतिव्रता जैसे परंपरागत मूल्यों के प्रति समर्पित थी और साथ ही अपने अधिकार, स्वतंत्रता और अस्तित्व का आग्रह कर रही थी। यह प्रेमचंद ही नहीं उस युग की नारी की मांग थी।

4.5. निष्कर्ष :

निष्कर्षत: हमलोग कह सकते हैं कि इस पावन देश भारतवर्ष में विवेकानंद, गाँधी और प्रेमचंद के नारी-दर्शन को आधुनिकता, भूमंडलीकरण तथा यौन-मुक्ति की बड़ी-से-बड़ी आँधी भी नष्ट नहीं कर सकेगी। यह सच है, यह आँधी चलती रहेगी, कामुकता एवं अश्लीलता का विस्तार भी होगा, कुछ देश की शिक्षित युवतियाँ उसे कैरियर भी बनाएगी तथा फिल्मों एवं सौंदर्य प्रतियोगिताओं में नग्न प्रदर्शन भी करेंगी तथा वेश्यावृत्ति के व्यापार भी चलते रहेंगे। परंतु भारत के सम्पूर्ण नारी समाज को इन अर्थों में आधुनिक बनाना असंभव ही होगा।

भारतीय नारी में यौन-शुचिता की जड़ें इतनी गहरी हैं कि वह तितली बनकर भी मधुमक्खी बनी रहती है। मधुमक्खी परिवार, सेवा तथा त्याग की प्रतीक है। प्रेमचंद का यही नारी दर्शन तथा भारतीय नारी का भी यही जीवन दर्शन है। भारतीय नारी में आधुनिकता का प्रवेश भी इसी आधारभूत दर्शन से ही होगा और वह तभी स्थायी एवं उपयोगी होगा। भारत का अर्द्धनारीश्वर का दर्शन, स्त्री-पुरुष की परस्परपूरकता एवं एकनिष्ठता, विवाह तथा परिवार की पवित्रता एवं परस्पर का अटूट विश्वास किसी भी पश्चिमी यौन आंधी से भारतीय नारी को उसके अधिकार तथा स्वतंत्रता के साथ उसकी यौन शुचिता को भी बनाये रखेगी।

4.6 संदर्भ :

1. डॉ. त्रिलोकीनाथ पाण्डेय- प्रेमचंद के औपन्यासिक चरित्र की सामाजिक पृष्ठभूमि, पृ. 81
2. प्रेमचंद- गोदान, पृ. 7
3. वही-गोदान, पृ. 96
4. वही- पृ. 105
5. वही -गोदान, पृ. 300
6. डॉ. त्रिलोकीनाथ पाण्डेय- प्रेमचंद के औपन्यासिक चरित्रों की सामाजिक पृष्ठभूमि, पृ. 97
7. प्रेमचंद - गोदान, पृ. 49
8. वही, पृ. 131
9. वही, पृ. 133
10. वही-पृ. 282
11. डॉ. त्रिलोकीनाथ पाण्डेय- प्रेमचंद के औपन्यासिक चरित्रों की सामाजिक पृष्ठभूमि, पृ. 99
12. प्रेमचंद - गोदान, पृ. 244
13. डॉ. त्रिलोकीनाथ पाण्डेय- प्रेमचंद के औपन्यासिक चरित्रों की सामाजिक पृष्ठभूमि, पृ. 100
14. प्रयागराज मेहता- प्रेमचंद के पात्र-सं० कोमल कोठरी तथा विजयदान देथा, पृ. 138
15. प्रेमचंद - गोदान, पृ. 188
16. प्रेमचंद- निर्मला, पृ. 1
17. प्रेमचंद - गबन, पृ. 268
18. प्रेमचंद- सेवासदन, पृ. 64
19. डॉ. पृथारानी कर - प्रेमचंद तथा शरत्चन्द्र के कथा साहित्य के नारी पात्रों का तुलनात्मक अध्ययन, पृ. 119-120